दूरदर्शन में हिन्दी का भाषाई स्वरूप

डॉ0 विनोद कुमार

भाषा स्वयं में एक बहुआयामी व्यवस्था है जिसका मुख्य प्रर्काय संप्रेषण है। उसका संप्रेषण तत्व विविधता से भरा हुआ है। उसकी यह विविधता उसे गत्यात्मकता और जीवंतता भी प्रदान करती है जो नवीनता का उत्स है। इसकी नवीनता, इसके नवीन शब्द, पद, पदबंध और वाक्य प्रयोगों के रूप में दिखती है। यह नवीन प्रतीकात्मकता, बिम्ब विधान, अग्रप्रस्तुति और विचलनों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है तथा भाषा के सामाजिक प्रकार्यों को आगे बढ़ाते हुए जीवन की आवश्यकता के वैविध्य के अनुरूप अपना स्वरूप पुष्पित–पल्लवित करती है। आधुनिक काल जनसंचार माध्यमों तथा संचांरी क्रांति का रहा है तथा भाषा के लिहाज से भी यह सदी भाषा के नवनवोन्मेषशाली रूपों तथा शैलियों की प्रवर्तक रही है। समय के साथ जनसंचार के माध्यम तथा उनके भाषाई प्रयोग के बहुआयामी स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। इस नवीन भाषाई संसार का संवाहक बना दूरदर्शन माध्यम। दृश्य–श्रव्य माध्यमों में सर्वाधिक विस्तार वाला माध्यम दूरदर्शन (टेलीविजन) माध्यम है, जिसका वर्तमान भाषाई फलक सबसे व्यापक है। इसकी भाषा का विस्तृत आयाम, इसकी विविध प्रयुक्तियों के हिसाब से अपना दायरा तय करती हैं। यह वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित हिन्दी का अधुनातन रूप है।